Institute of Advanced Studies in Education (IASE) Bilaspur

Name – Dr. Nishi Bhambari

Class – B.Ed 2nd Year

Subject - Learning and Teaching

Paper – I

Topic – Factors that influence learning

Objectives :-

1. बी.एड. प्रशिक्षार्थियों में समझ विकसित होगी कि अधिगम को कौन कौन से कारक प्रभावित करते है।
2. बी.एड. प्रशिक्षार्थियों में समझ विकसित होगी, कि कैसे सीखने की क्षमता को विकसित किया जाए।

Content :- अधिगम (Learning) को प्रभावित करने कारकों को निम्न रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. अधिगम कर्ता (Learning) या विद्यार्थी का व्यवहार
2. विद्यार्थी के अधिगम अनुभव (Learning experience)
3. वातावरण जन्य परिस्थिति तथा उपलब्ध संसाधनों से संबंधित (Factors associated with the available resources and environmental situation)

अधिगम कर्ता (Learning) या विद्यार्थी का व्यवहार :–

सीखने में विद्यार्थी की प्रमुख भूमिका रहती है, जो भी अपेक्षित परिवर्तन व्यवहार में होता है,उसका केन्द्र बिन्दु विद्यार्थी ही होता है। किसी सीखने की परिस्थिति में विद्यार्थी कितना सीखेगा ये उसकी मूल प्रकृति , अर्जित अनुभव, योग्यता, सीखने की प्रक्रिया, में उसके द्वारा किए जाने वाले प्रयास आदि पर निर्भर करेंगे।

1. **विद्यार्थी का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य (Learners physical and mental health)**

उदाहरण :–

- यदि बच्चे शारीरिक रूप से अस्वस्थ्य है, अक्सर बीमार रहते है, कोई शारीरिक रोग है, कुपोषित या कमजोर हो तो सीखने में ध्यान और रूचि कम हो जाती है।

- यदि अचानक किसी दिन सिरदर्द, पेटदर्द, या अन्य परेशानी हो जाए तो भी सीखने में व्यवधान होता है।
- यदि बच्चों की सीखने की गति धीमी हो, सीखने में कठिनाइयाँ हो, मानसिक तनाव से ग्रसित हो, तो बच्चों में मानसिक थकान (Mental fatigue) होता है। बच्चे को नींद, झपकी, सिरदर्द भारीपन आदि लक्षण आएंगे बच्चों में स्फूर्ति की कमी होगी इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का नकारात्मक प्रभाव सीखने में व्यवधान उत्पन्न करता है।

  सुझाव :– आवश्यक है कि शालाओं में पर्याप्त रूप से बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए नियमित जांच, खेलकूद, योग, प्राणायाम स्वच्छता मध्यान्ह भोजन (उच्च प्राथमिक स्तर) स्थल मनोरंजन हेतु सांस्कृतिक साहित्यिक, Scout/Guide आदि गतिविधियों में सहभागिता सुनिश्चित करें। समावेशी शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था हो।

2. **<u>विद्यार्थियों की मूलभूत क्षमताए तथा योग्यता (The basic potential of the learner)</u>**

   उदाहरण :– कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता लेने, बच्चों को project देकर स्वअध्ययन के लिए प्रेरित करना, प्रयोग, Copperalive learning, Vertual class आदि के माध्यम सुनिश्चित करने से बच्चों की रूचि बढेगी।

   विद्यार्थियों की रूचियाँ, अभिवृतियाँ, सीखने को प्रभावित करती है अतः बच्चों का उनकी रूचि के अनुसार विषय का प्रस्तुतीकरण करें, क्योंकि बच्चे नवाचारी प्रक्रियाओं से अभिप्रेरित होते है।

3. **<u>पूर्व अधिगम (Previons leaning)</u>** :–

   बच्चों में पूर्व में अर्जित कुशलताएँ, किसी विषय विशेष या क्षेत्र विशेष से संबंधित अधिगम अनुभव का पूर्ण ज्ञान बच्चों के सीखने को प्रभावित करता है।

   सुझाव :– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान नवीन विषय वस्तु के प्रस्तुती के पूर्व विषय से संबंधित बच्चों के पूर्व अनुभव एवं पूर्व ज्ञान पर चर्चा करें। चर्चा

का माध्यम प्रश्न, उदाहरण, प्रयोग,, कहानी, आदि हो सकते है। कक्षा में ज्ञात से अज्ञात की ओर अधिगम प्रक्रिया का प्रारंभ करें।

4. **महत्वकांक्षा और उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर (The level of aspiration and achievement motivation) :–**

अधिगम प्रक्रिया में अच्छे परिणामों की प्राप्ति बच्चों को सकारात्मक पुनर्बलन (Postive rein forcement) प्रदान करती है। बच्चे स्व–प्रेरित होकर अपनी योग्यता के अनुरूप आकांक्षाओं को निर्धारित करते है। बच्चों को स्वप्रेरित होकर स्वयं की योग्यता के अनुरूप विषयों का चयन,उच्च शिक्षा के लिए (Guidance counselling) करना आवश्यक होगा।

5. **जीवन उद्देश्य (Goals of life) :–**

सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति, सीखने के तरीके, सीखने की शैली बच्चों के जीवन शैली से जुड़ी रहती है यदि बच्चे अपने जीवन में लक्ष्यों का निर्धारण स्वयं करते है, तो वे अपनी रूचि के क्षेत्र/विषयों का चयन कर लेते है, और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए स्वयं प्रयास करते है, और उनकी सीखने की प्रगति अच्छी होती है। उन विषयों के प्रति उनका सकारात्मक दृष्टिकोण होता है, वे धैर्य पूर्वक सीखने का प्रयास करते है और सफल होते है।

सुझाव :– माता पिता, अभिभावक, शिक्षक, दोस्त एवं अन्य यह ध्यान रखे, कि उन्हें दबाव डालकर लक्ष्यों का निर्धारण हेतु बच्चों पर बोझ न डालें साथी दबाव का नकारात्मक प्रभाव भी बच्चों पर पड़ता है। बच्चे Peer pressure के कारण लक्ष्य तो बना लेते है, पर अरूचि के कारण सीखने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है अतः Career Counselling की जाए, दबाव नही।

6. **तत्परता एवं इच्छा शक्ति (Readines and will power) :–**

शिक्षक अपने सीखने सिखाने की प्रक्रिया को रचनात्मक, आकर्षक, नवाचारी तरीकों से पूर्ण करें, बच्चे आपकी कक्षा में सीखने के लिए तत्पर रहेंगे। अपनी कक्षा को छात्र केन्द्रित, बनाना होगा, मित्रवत व्यवहार, करना होगा, Virtual class, video lessons, learning resources का प्रयोग करना, विषयवस्तु,, रूचिकर बनाना होगा। बच्चों में दृढइच्छा शक्ति हो, तो बच्चे प्रतिकूल परिस्थितियों में सीख लेते है।

7. **प्रेरणा (Motivation) :–**

बच्चे सीखने के लिए प्रेरित होंगे तो वे सीखने में रूचि लेते है इसलिए बच्चों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

8. **ध्यान स्मरण एवं विस्मरण (Attention, memory and forgetting)**

शीघ्र स्मरण, उत्तमधारण, पुनःस्मरण तथा शीघ्र पहचान की प्रक्रिया अधिगम को प्रभावित करती है। यदि बच्चे को पूर्व अनुभव के आधार पर सीखने का अवसर मिले ज्ञान को धारण कर स्वयं ज्ञान का निर्माण करेगा अवधारणा विकसित करेगा एवं सीख जायेगा। अतः बच्चों की रूचि अनुरूप ज्ञान, एकाग्रता एवं संवेगात्मक स्थिरता हेतु शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता करें। विषय वस्तु के प्रत्यक्षीकरण (Perception) का अवसर मिलने पर विस्मृति कम होगी रटने पर आधारित अधिगम पर जोर न देकर Learning as concept पर जोर दिया जाए।

2. **अधिगम अनुभवों की प्राप्ति से जुड़े कारक (Factor associated with the nature of learning expenences) :–**

1. **अधिगम अनुभव की प्रकृति (The Nature of learning experience) :–**

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान यदि कक्षा में Cooperative learning, discussion, problem solving, ICT Learning Resonrce का प्रयोग आदि किया जाए, जिसमें छात्रों की पूर्ण सहभागिता हो तो बच्चों को स्वयं सोचने, समझने, चिन्तन करने का अवसर प्राप्त होगा। अनुभव ऐसे हो, जिसके द्वारा बच्चों में भाषा की क्षमता कौशल, सम्प्रेषण कौशल एवं अवधारणा का निर्माण हो।

2. **परिणाम का ज्ञान (Knowledge of result) :–**

सतत आकलन की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करना आवश्यक है। Peer learning, peer assessment, self assessment quiz आदि प्रक्रियाए सतत आकलन के प्रति बच्चों में रूचि जागृत करती है। सकारात्मक परिणाम की प्राप्ति का सतत प्रयास बच्चों को सीखने को प्रभावित करता है।

3. **अधिगम संसाधन (Learning resources) :–**

स्वनिर्मित, विषयवस्तु के अनुकूल, गतिविधि आधारित, Creative, Innovative, ICT आदि अधिगम संसाधनों का निर्माण बच्चे स्वयं शिक्षक के सहयोग से करेंगे एवं कक्षा में उपयोग करेंगे तो सीखने में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3. **वातावरण जन्य परिस्थितियाँ तथा उपलब्ध संसाधनों से संबंधित कारक (Factors associated with available resources and environmental Situation) :–**

1. **शिक्षक का प्रभाव :–**

शिक्षक की शिक्षण क्षमता बच्चों के प्रति व्यवहार कक्षा प्रबंधन, प्रभावशाली शिक्षण कौशल, शिक्षक–छात्र अन्तः क्रिया आदि बच्चों के व्यवहार को एवं सीखने को प्रभावित करते है। अतः शिक्षक को मार्गदर्शक, संवेदनशीन सुविधादाता एवं बच्चों को उनके सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में समझना होगा। समावेशी वातावरण बनाना होगा।

2. **कक्षा/शाला का वातावरण** :– कक्षा प्रबन्धन प्रजातान्त्रिक होना आवश्यक है।

- बैठक व्यवस्था उचित होना, सौन्दर्यपूर्ण वातावरण, कक्षा में प्रत्येक बच्चे को समान अवसर हो।
- स्वस्थ एवं सहयोगपूर्ण प्रतिस्पर्धा के अवसर हो।
- बच्चे कक्षा में स्वयं को समायोजित कर सके।
- शिक्षक–छात्र, छात्र–छात्र अन्तक्रिया हो।
- मानसिक थकान पर ध्यान देना।
- बच्चों की अधिगम शैली के अनुरूप कक्षा शिक्षण की प्रक्रिया करना।
- स्व अनुशासन हेतु प्रेरित करना।
- बच्चों की सृजनात्मक क्षमता विकसित करने हेतु पाठ्यसहभागी क्रियाएँ पाठ्येत्तर गतिविधियों में सहभागिता करना।
- बच्चों को स्वयं की पहचान हेतु आत्म चिन्तन, Mindfullness Activities करने का अवसर देना।

- बच्चों में जीवनमूल्यों का विकास हो सके। शाला में प्रत्येक कक्षा में Happiness and well being, खुशहाल वातावरण एवं मानसिक शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना
- पर्यावरणीय जागरूकता/स्वच्छता आधारित गतिविधियों में बच्चों की सहभागिता लेना।
- शाला का वातावरण ऐसा हो, कि बच्चों के जीवन मूल्य विकसित हो ताकि बच्चों में सीखने की क्षमता विकसित हो सके।

3. **पाठ्यवस्तु संबंधी कारक (Content Related factors)** :–

- **पाठ्यवस्तु की प्रकृति (Nature of content)** :–पाठयवस्तु उचित, सरल, स्पष्ट, भाषा का उचित प्रयोग, बच्चों के स्तर के अनुकूल, उद्देश्य, आधारित, प्रक्रिया आधारित, गतिविधि आधारित आकर्षक होने से बच्चों के सीखने में सार्थक प्रभाव पड़ता है।
- **पाठ्यवस्तु का संगठन (Organisation of content) :–** पाठ्यवस्तु का यदि तार्किक कम एवं सरल से कठिन के क्रम में तथा आगमन रूप में संगठित रूप में एवं शिक्षक द्वारा प्रस्तुत किया जाए तो सीखना सकारात्मक होता है।
- **पाठ्यवरूतु का कठिनाई स्तर (Difficulty level) :–** पाठ्यवस्तु की कठिनाई स्तर का निर्धारण छात्र की आयु, परिपक्वता एवं पूर्वज्ञान के आधार पर होता है, तो सीखने की प्रक्रिया प्रभावशाली होती है।
- **भाषा शैली (Lnaguage) :–** सरल, स्पष्ट, अर्थपूर्ण, भाषा बच्चों को जल्दी समझ में आती है।
- **पाठयवस्तु का जीवन से संबंध :–** पाठ्यवस्तु की जीवन से उपयोगिता यदि है तो बच्चे शीघ्रता से सीखते है। कौशल आधारित पाठ्यवस्तु के प्रति बच्चों में रूचि अधिक होती है।
- **पारिवारिक वातावरण (Family Enviornment) :–** बच्चों के प्रति अभिभावक का सौहार्दपूर्ण संबंध, मित्रवत् संबंध, उचित पालकत्व तथा दबाव का अभाव है तो बच्चों में सीखने के प्रति ललक होगी। दण्डात्मक अनुशासन अधिक सुरक्षा,

उच्च आकांक्षा, विषय चयन का दबाव, बच्चों में भेदभाव, एवं Stereotype behaviors आदि बच्चों के सीखने में नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। माता–पिता बच्चों की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करें तथा उन्हें निर्देशित करें कि वे स्वयं अपनी समस्याओं का निराकरण करने में सक्षम बने।

- **<u>सामाजिक वातावरण (Social enviornment)</u>** :– सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण बच्चों के रहन सहन, खान–पान, पहनावा, सोच को प्रभावित करता है। अतः बच्चों को सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में स्वयं का सकारात्मक पहलुओं को धारण कर दृढता से निर्णय लेकर व्यवहार करना है।
- **<u>सोशल मीडिया का प्रभाव (Social Media)</u>** :– बच्चे सोशल मीडिया का प्रयोग सकारात्मक पहलुओं पर करेंगे तो सीखने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

आकलन :–

1. बच्चों की सीखने की क्षमता को कैसे विकसित किया जाए। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें।
2. अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।